IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, March 2026
Impact Factor: 8.2

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद: एक व्यापक अध्ययन

श्रीमती नाज़नीन बेगम

शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस - दमोह (मध्य प्रदेश)

सारांश (Abstract)

मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) हिंदी और उर्दू साहित्य के इतिहास में एक महान साहित्यिक हस्ती के रूप में स्थापित हैं, जिन्हें "उपन्यास सम्राट" और "हिंदी साहित्य के लियो टॉलस्टॉय" की उपाधि से सम्मानित किया जाता है। उनके साहित्यिक योगदान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनका सामाजिक यथार्थवाद (Social Realism) है, जिसने हिंदी साहित्य को काल्पनिक और मनोरंजन-प्रधान कथाओं के दायरे से निकालकर जमीनी वास्तविकताओं से जोड़ा।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से उन वर्गों की पीड़ा को आवाज दी जो पारंपरिक रूप से साहित्य में उपेक्षित रहे–गरीब किसान, मजदूर, महिलाएं, दलित और शोषित समुदाय। उनका मानना था कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य "जीवन की आलोचना" (Criticism of Life) है, न कि केवल मनोरंजन। उन्होंने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का हथियार बनाया और कहा कि जो रचना सामाजिक उपयोगिता नहीं रखती, उसे अस्वीकार कर देना चाहिए।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-31422